

| | |
|---|---|
| <p>The self is a problem that thought cannot resolve. There must be an awareness which is not of thought. To be aware, without condemnation or justification, of the activities of the self—just to be aware—is sufficient. If you are aware in order to find out how to resolve the problem, in order to transform it, in order to produce a result, then it is still within the field of the self, of the 'me'. So long as we are seeking a result, whether through analysis, through awareness, through constant examination of every thought, we are still within the field of thought, which is within the field of the 'me', of the T, of the ego, or what you will.</p> | <p>यह अहं एक ऐसी समस्या है विचार जिसका निदान नहीं कर सकता। एक ऐसी सजगता चाहिए जो विचारजनित न हो। सजग रहना, इस अहं की गतिविधियों को उचित-अनुचित ठहराये बिना--केवल उनके प्रति जागरूक रहना--यही पर्याप्त है। यदि आप इस आशय से जागरूक हैं कि 'कैसे' समस्या का समाधान किया जाए, 'कैसे' इसे रूपांतरित किया जाए, 'कैसे' कोई परिणाम प्राप्त किया जाए--तब यह जागरूकता अहं की परिधि में ही रहेगी। जब हम कोई परिणाम प्राप्त कर लेना चाहते हैं--चाहे वह विश्लेषण द्वारा हो, सजगता द्वारा हो या प्रत्येक विचार की निरंतर जांच-परख द्वारा हो--तब भी हम विचार की परिधि में ही रहते हैं जो कि स्वयं 'मैं' की, अहं की परिधि में स्थित है।</p> |
| <p>As long as the activity of the mind exists, surely there can be no love. When there is love, we shall have no social problems.</p> | <p>जब तक मन की गतिविधि विद्यमान रहती है, तब तक प्रेम हो ही नहीं सकता। और जब प्रेम विद्यमान होगा तब हमारी कोई सामाजिक समस्या नहीं रह जायेगी।</p> |
| <p>CHAPTER TWO</p> | <p>द्वितीय अध्याय</p> |
| <p>What Do You Want?</p> | <p>आप चाहते क्या हैं?</p> |
| <p>—1 —</p> | <p>- 9 -</p> |
| <p>Security, Happiness, Pleasure</p> | <p>सुरक्षा, प्रसन्नता, सुख-विलास</p> |
| <p>What is it that most of us are seeking? What is it that each one of us wants? Especially in this restless world, where everybody is trying to find some kind of peace, some kind of happiness, a refuge, surely it is important to find out, isn't it, what it is that we are trying to seek, what it is that we are trying to discover? Probably most of us are seeking some kind of happiness, some kind of peace; in a world that is ridden with turmoil, wars, contention, strife, we want a refuge where there can be some peace. I think that is what most of us want. So we pursue, go from one leader to another, from one religious organization to another, from one teacher to another.</p> | <p>वह क्या है जिसकी लालसा में हममें से अधिकांश लोग रहते हैं? वह क्या है जिसे हममें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है? विशेष रूप से इस उद्विग्न संसार में जहां प्रत्येक व्यक्ति किसी प्रकार की शांति, किसी प्रकार की खुशी, किसी प्रकार का आश्रय पाने के प्रयास में लगा है, यह जान लेना बहुत महत्वपूर्ण है कि आखिर वह क्या है जिसकी लालसा में हम सब रत हैं, वह क्या है जिसकी तलाश में हम सब लगे हैं? शायद अधिकतर लोग ऐसे संसार में जो विक्षोभ, युद्ध, विवाद और कलह से त्रस्त है किसी-न-किसी प्रकार के सुख-चैन, किसी प्रकार की शांति की चाहत में हैं। हम इसमें कोई ऐसा शरण स्थल चाहते हैं जहां कुछ तो शांति मिल सके। मैं समझता हूं कि हममें से अधिकांश लोग यही चाहते हैं।</p> |

| | |
|---|---|
| <p>fromF&LF</p> | <p>इसीलिए हम इसकी तलाश में भटकते रहते हैं--एक नेता से दूसरे नेता के पास, एक धार्मिक संगठन से दूसरे के पास, एक गुरु से दूसरे गुरु के पास।</p> |
| <p>Now, is it that we are seeking happiness or is it that we are seeking gratification of some kind from which we hope to derive happiness? There is a difference between happiness and gratification. Can you seek happiness? Perhaps you can find gratification but surely you cannot find happiness. Happiness is derivative; it is a by-product of something else. So, before we give our minds and hearts to something which demands a great deal of earnestness, attention, thought, care, we must find out, must we not, what it is that we are seeking; whether it is happiness, or gratification? I am afraid most of us are seeking gratification. We want to be gratified, we want to find a sense of fullness at the end of our search.</p> | <p>तो क्या हम इस खुशी, इस सुख-चैन को खोज रहे हैं या एक ऐसी परितुष्टि चाह रहे हैं जिससे हमें खुशी मिल पाने की आशा है? खुशी और परितोष में अंतर है। क्या खुशी को, सुख-शांति को भला खोजा जा सकता है? हो सकता है कि आपको परितोष प्राप्त हो जाये, परंतु प्रसन्नता कदापि नहीं। प्रसन्नता, सुख-शांति तो परोक्ष होती है, किसी अन्य चीज़ का उपजात होती है। तो इससे पहले कि हम अपना दिल-औ'-दिमाग किसी ऐसी चीज़ में लगा दें जिसमें अत्यधिक लगन, पूरे ध्यान, विचारशीलता और सावधानी की दरकार हो, क्या हमें यह जान नहीं लेना चाहिए कि आखिर वह है क्या जिसके पीछे हम दौड़ पड़े हैं? वह खुशी है या परितुष्टि है? मुझे यह कहने में अफसोस होता है कि अधिकतर लोग परितोष चाहते हैं। हम परितुष्ट होना चाहते हैं, अपनी तलाश के अंत में एक तृप्ति-भाव चाहते हैं।</p> |
| <p>After all, if one is seeking peace one can find it very easily. One can devote oneself blindly to some kind of cause, to an idea, and take shelter there. Surely that does not solve the problem. Mere isolation in an enclosing idea is not a release from conflict. So we must find, must we not, what it is—inwardly, as well as outwardly—that each one of us wants? If we are clear on that matter, then we don't have to go anywhere, to any teacher, to any church, to any organization. Therefore our difficulty is, to be clear in ourselves regarding our intention, is it not? Can we be clear? And does this clarity come through searching, through trying to find out what others say, from the highest teacher to the ordinary preacher in a church around the corner? Have you got to go to somebody to find out? Yet that is what we are doing, is it not? We read innumerable books, we attend many meetings and</p> | <p>यदि कोई शांति चाहे तो उसे यह बड़ी सरलता से मिल सकती है--वह किसी प्रकार के हेतु या किसी मत-विचार के प्रति स्वयं को समर्पित कर दे, उसकी शरण में चला जाए। परंतु निश्चित ही इससे समस्या का समाधान नहीं होगा। किसी परिबद्ध मत-विचार की चार दीवारी में एकांतवास कोई द्वंद्व से मुक्ति नहीं है। इसलिये क्या हमें यह नहीं जान लेना चाहिए कि आंतरिक रूप से और बाहरी रूप से भी, वह क्या है जिसे प्रत्येक व्यक्ति चाहता है? यदि हम इस विषय में स्पष्ट हो जाएं तो फिर हमें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी--न किसी गुरु के पास, न किसी पूजा स्थल में, न किसी संगठन में। तो हमारी कठिनाई है--अपने ही आशय के बारे में स्वयं स्पष्ट न हो पाना--यही है न? क्या हम स्पष्ट हो सकते हैं? और क्या यह स्पष्टता किसी तलाश द्वारा या दूसरों की कही गई बातों द्वारा या किसी साधारण प्रवचनकर्ता से लेकर किसी पहुंचे हुए गुरु को सुनकर प्राप्त की जा सकती है? इस स्पष्टता को जानने के लिए क्या</p> |

| | |
|--|---|
| <p>discuss, we join various organizations trying thereby to find a remedy to the conflict, to the miseries in our lives. Or, if we don't do all that, we think we have found; that is, we say that a particular organization, a particular teacher, a particular book satisfies us; we have found everything we want in that; and we remain in that, crystallized and enclosed.</p> | <p>आपको किसी के पास जाने की आवश्यकता है? परंतु फिर भी हम यही कुछ किये जा रहे हैं। हम अनगिनत पुस्तकें पढ़ते हैं, अनेक गोष्ठियों में जाते हैं, विचार-विमर्श करते हैं, हम अपने जीवन के द्वंद्व और दुख से छुटकारे के निदान हेतु विभिन्न संगठनों में शामिल हो जाते हैं। अथवा यदि हम यह सब नहीं कर रहे हैं तो हम सोच रहे होते हैं कि हमने पा लिया है अर्थात् हम कहने लगते हैं कि अमुक संगठन या अमुक गुरु या अमुक पुस्तक से मैं संतुष्ट हूँ, जो कुछ मैं चाहता था मुझे उसमें मिल गया है। और फिर हम उसी में जमे रहते हैं--घनीभूत होकर, चारदीवारी में कैद।</p> |
| <p>Do we not seek, through all this confusion, something permanent, something lasting, something which we call real, God, truth, what you like—the name doesn't matter, the word is not the thing, surely. So don't let us be caught in words. Leave that to the professional lecturers. There is a search for something permanent, is there not, in most of us? — something we can cling to, something which will give us assurance, a hope, a lasting enthusiasm, a lasting certainty, because in ourselves we are so uncertain. We do not know ourselves. We know a lot about facts/what the books have said; but we do not know for ourselves, we do not have a direct experience.</p> | <p>इस सारी भ्रांति में, उलझन में क्या हम एक ऐसी चीज़ की तलाश में नहीं होते हैं जो स्थायी हो, सदा विद्यमान रहने वाली हो, एक ऐसी चीज़, जिसे हम यथार्थ, ईश्वर, सत्य या ऐसा ही कोई नाम दे सकें। निश्चय ही, नाम का महत्त्व नगण्य होता है, शब्द यथार्थ नहीं होते। इसलिये शब्दों में मत उलझ जाइए। यह कार्य पेशेवर प्रवक्ताओं के लिये छोड़ दीजिये। अधिकतर लोग ऐसी चीज़ की तलाश में रहते हैं जो स्थायी हो, एक ऐसी चीज़ की तलाश में जिससे हम जुड़े रह सकें, हमें आश्वासन, आशा, दृढ़ उत्साह और एक टिकाऊ निश्चितता देती रहे क्योंकि हम स्वयं में बहुत अधिक अनिश्चित हैं, हम स्वयं को जानते ही नहीं हैं। हम दुनिया भर के तथ्य जानते हैं, पुस्तकों में क्या कहा गया है यह हम जानते हैं, परंतु यह सब हमने स्वयं प्रत्यक्षतः नहीं सीखा होता है।</p> |
| <p>And what is it that we call permanent? What is it that we are seeking, which will, or which we hope will give us permanency? Are we not seeking lasting happiness, lasting gratification, lasting certainty? We want something that will endure everlastingly, which will gratify us. If we strip ourselves of all the words and phrases, and actually look at it, this is what we want. We want permanent pleasure...</p> | <p>और वह क्या है जिसे हम स्थायी कहते हैं? और वह क्या है जिसकी लालसा में हम इसलिये लगे हैं या इस आशा से लगे हैं कि वह हमें स्थायित्व प्रदान कर देगा? क्या हम स्थायी सुख-चैन, स्थायी परितोष, स्थायी निश्चितता की लालसा में नहीं लगे हुए हैं? हम कोई ऐसी चीज़ चाहते हैं जो सदा-सर्वदा के लिये टिकी रहे, जो हमें परितोष देती रहे। यदि हम अपनी चाहना पर चढ़े सारे शब्द-आडंबरों को उतार दें और फिर वस्तुतः उसे देखें तो पाएंगे कि सचमुच यही तो है जो हम चाह रहे हैं। हम सदा-सर्वदा रहने वाला सुख-विलास चाहते हैं</p> |

| | |
|--|---|
| -2- | - २ - |
| Happiness Cannot Be Pursued | सुख-शांति के पीछे दौड़ना व्यर्थ है |
| <p>What do you mean by happiness? Some will say happiness consists of getting what you want. You want a car, and you get it, and you are happy. I want a sari or clothes; I want to go to Europe, and if I can, I am happy. I want to be the...greatest politician, and if I get it, I am happy; if I cannot get it, I am unhappy. So what you call happiness is getting what you want, achievement or success, becoming noble, getting anything that you want. As long as you want something and you can get it, you feel perfectly happy; you are not frustrated. But, if you cannot get what you want, then unhappiness begins. All of us are concerned with this, not only the rich and the poor. The rich and the poor all want to get something for themselves, for their family, for society; and if they are prevented, stopped, they will be unhappy. We are not discussing, we are not saying that the poor should not have what they want. That is not the problem. We are trying to find out what is happiness and whether happiness is something of which you are conscious. The moment you are conscious that you are happy, that you have much, is that happiness? The moment you are conscious that you are happy, it is not happiness, is it? So you cannot go after happiness. The moment you are conscious that you are humble, you are not humble. So happiness is not a thing to be pursued; it comes. But if you seek it, it will evade you.</p> | <p>सुख-शांति से आपका तात्पर्य क्या है? कुछ लोग कहेंगे कि जो चाहें वह मिल जाए यही खुशी है। आपको एक कार चाहिए और वह आपको मिल जाती है तो आप खुश हो जाते हैं। मुझे एक साड़ी या कुछ वस्त्र चाहिए या मैं यूरोप जाना चाहता हूँ और यदि मैं जा सका तो सुखी हो गया। मैं एक शीर्षस्थ राजनेता बनना चाहता हूँ। यदि मैं बन गया तो खुश, और नहीं बन पाया तो नाखुश हो जाता हूँ। तो आप जिसे सुख-शांति कहते हैं वह है चाहना का मिल जाना--उपलब्धि, सफलता, महानता--जो कुछ भी चाहना वह पा लेना। जब तक आप जो चाहते हैं वह आपको मिलता रहता है आप स्वयं को पूरी तरह प्रसन्नचित्त महसूस करते हैं, आप खिन्न नहीं होते। परंतु जब आप जो चाहते हैं वह आपको मिल नहीं पाता, तब दुख शुरू हो जाता है। हम सब ऐसे दुख से दुखित रहते हैं--क्या धनी और क्या निर्धन। धनी और निर्धन सभी कुछ न कुछ पाना चाहते हैं--अपने लिए, अपने परिवार के लिए, अपने समाज के लिए और यदि उन्हें उससे वंचित रखा जाए, रोक दिया जाए, तो वे नाखुश हो जाते हैं। यहां हमारी चर्चा का विषय या हमारा कहना यह नहीं है कि निर्धन जो चाहता है उसे वह न मिले। मुद्दा यह नहीं है। हम तो यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि सुख-चैन, खुशी क्या है और क्या वह कोई ऐसी चीज़ है जिसके प्रति आप सचेत रह सकें। जिस पल आप सचेत होते हैं कि आप खुश हैं, आपके पास बहुत कुछ है, तो क्या वह खुशी होती है? जिस पल आप सचेत हो जाते हैं कि आप सुख-चैन से हैं तब वह सुख-चैन नहीं रह जाता, है न? तो आप सुख-चैन के पीछे पड़कर उसे नहीं पा सकते। जिस पल आप सचेत हो जाते हैं कि आप विनम्र हैं, तब आप विनम्र नहीं रह जाते। तो प्रसन्नता कोई वस्तु नहीं है जिसके पीछे दौड़कर आप उसे पकड़ लें, उसका आगमन तो स्वतः होता है। परंतु यदि आप उसे पाने के लिये उसके पीछे दौड़ेंगे तो वह आप से आंख-मिचौली खेलती रहेगी।</p> |

| | |
|---|--|
| — 3 — | - ३ - |
| Pleasure, Enjoyment, Turns into Dependency and Fear of Loss | सुख-विलास, हर्षोल्लास अंततः निर्भरता और खोने के भय में बदल जाते हैं |
| We do not really enjoy anything. We look at it, we are superficially amused or excited by it, we have a sensation which we call joy. But enjoyment is something far deeper, which must be understood and gone into. | हम किसी भी चीज़ का वास्तविक आनंद नहीं ले पाते। जब हम किसी चीज़ को देखते हैं तब ऊपरी तौर पर उस पर रीझ जाते हैं या उद्दीप्त हो उठते हैं, हमारे अंदर एक मनोवेग उत्पन्न हो जाता है जिसे हम आनंद कह देते हैं। परंतु आनंद की अनुभूति तो कहीं गहरी बात है जिसे समझा जाना चाहिए, जिसमें पैठना चाहिए। |
| When we are young, we enjoy and take delight in things— in games, in clothes, in reading a book or writing a poem or painting a picture, or in pushing each other about...As we grow older, although we still want to enjoy things, the best has gone out of us; we prefer other kinds of sensations— passion, lust, power, position. | युवावस्था में हम अनेक चीज़ों में आनंद और आह्लाद महसूस करते हैं--खेलों में, वेशभूषा में, कोई पुस्तक पढ़ने में, या कविता करने में, चित्र बनाने में, या एक दूसरे से धक्का-मुक्की करने में... जब हम बड़े हो जाते हैं, यद्यपि तब भी हममें आनंद उठाने की चाहना बनी रहती है, परंतु तब तक हमारे अंदर जो कुछ बहुत बढ़िया था वह जा चुका होता है, तब हम अन्य प्रकार के मनोवेगों को अधिक महत्त्व देने लगते हैं--कामुकता, वासना, शक्ति, प्रतिष्ठा। |
| -4- | - ४ - |
| As we grow older, the things of life lose their meaning; our minds become dull, insensitive, and so, we try to enjoy, we try to force ourselves to look at pictures, to look at trees, to look at little children playing. We read some sacred book or other and try to find its meaning, its depth, its significance. But, it is all an effort, a travail, something to struggle with. | ज्यों-ज्यों हम बड़े होते जाते हैं जीवन की अनेक चीज़ें अपना अर्थ खोती जाती हैं। हमारा मन कुंद और संवेदनशून्य होता जाता है, और तब हम आनंदित होना चाहते हैं; हम चित्र देखने, वृक्षों को निहारने, छोटे-छोटे बच्चों को खेलते देखने जैसे कार्यों में स्वयं को लगा देते हैं। कोई पवित्र पुस्तक या कुछ और पढ़ने लगते हैं और उसका अर्थ, उसकी गहनता, उसका महत्त्व जानने का प्रयास करते हैं। परंतु यह सब हाथ-पैर मारना है, परिश्रम है, किसी चीज़ से जूझना है। |
| I think it is very important to understand this thing called joy, the enjoyment of things. When you see something very beautiful, you want to possess it, you want to hold onto it, you want to call it | मेरे विचार से, यह आनंद क्या है, वस्तुगत प्रसन्नता क्या है, चीज़ों में आनंद लेना क्या होता है, इसे समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है। आप जब कोई ऐसी चीज़ देखते हैं जो अत्यंत सुंदर है तो आप उसका स्वामित्व चाहते हैं, आप |

| | |
|---|---|
| <p>your own—it is my tree, my bird, my house, my husband, my wife. We want to hold it, and in that very process of holding, the thing that you once enjoyed is gone because in the very holding there is dependence, there is fear, there is exclusion, and so the thing that gave joy, a sense of inward beauty, is lost, and life becomes enclosed...</p> | <p>उसे हासिल कर लेना चाहते हैं, आप चाहते हैं कि आप उसे अपना कह सकें, मेरा वृक्ष, मेरा मकान, मेरी पत्नी, मेरा पति। हम उसे अपने धारणाधिकार में, अपने कब्जे में ले लेना चाहते हैं। और इसी धारणाधिकार की प्रक्रिया में वह चीज़ जिससे कभी आपको खुशी मिली थी वह तिरोहित हो जाती है क्योंकि इस धारणाधिकार से ही निर्भरता आ जाती है, भय आ जाता है भेदभाव या अलग-थलग होने का भाव आ जाता है। और जिस चीज़ ने आपको आह्लाद की, आंतरिक सौंदर्य की एक अनुभूति दी थी, वह कहीं खो जाती है और जीवन परिबद्ध होकर रह जाता है।</p> |
| <p>To know real joy, one must go much deeper.</p> | <p>वास्तविक आनंद को जानने के लिये हमें कहीं अधिक गहरे पैटना होगा।</p> |
| <p>-5-</p> | <p>- ५ -</p> |
| <p>Joy Is the Absence of the 'Me' that Wants</p> | <p>चाहने-मांगने वाले अहं का अभाव ही आनंद है</p> |
| <p>We may move from one refinement to another, from one subtlety to another, from one enjoyment to another, but at the center of it all there is the 'me'—the 'me' that is enjoying, that wants more happiness, the 'me' that searches, looks for, longs for happiness, the 'me' that struggles, the 'me' that becomes more and more "refined," but never likes to come to an end. It is only when the 'me' in all its subtle forms comes to an end that there is a state of bliss which cannot be sought after, an ecstasy, a real joy, without pain, without corruption. Now, in all our joy, all our happiness, is corruption; because behind it there is pain, behind it there is fear.</p> | <p>हम एक परिष्कार से दूसरे परिष्कार, एक सूक्ष्मता से दूसरी सूक्ष्मता, एक मनबहलाव से दूसरे मनबहलाव की ओर भले ही आवागमन कर लें, परंतु इस सब के केंद्र में रहता अहं ही है—वह अहं जो मन बहला रहा है, जो और अधिक सुख-चैन चाह रहा है, वह अहं जो खुशी तलाश रहा है, खोज रहा है, मांग रहा है, वह अहं जो जूझ रहा है, वह अहं जो अधिकाधिक 'परिष्कृत' तो हो रहा है परंतु कभी थमना नहीं चाहता। जब यह अहं अपनी संपूर्ण सूक्ष्मताओं सहित समापन पर आ जाए, केवल तभी उस दिव्यानंद की स्थिति आ पाती है जिसे दौड़ कर नहीं पकड़ा जा सकता, जो एक परम आह्लाद है, वास्तविक आनंद है जिसमें न कोई पीड़ा है और न प्रदूषण। अभी तो हमारी हर खुशी, हर आनंद में प्रदूषण है क्योंकि उसके पीछे पीड़ा भी रहती है और भय भी।</p> |
| <p>When the mind goes beyond the thought of the 'me', the experiencer, the observer, the thinker, then there is a possibility of happiness which is incorruptible. That happiness cannot be made permanent, in</p> | <p>जब मन अहं की, अनुभवकर्ता, अवलोकनकर्ता और विचारकर्ता की स्थिति से परे पहुंच जाता है तब उस खुशी की संभावना बनती है जिसे प्रदूषित नहीं किया जा सकता। यह सुख-चैन उस अर्थ में स्थायी नहीं हो सकता जिस अर्थ</p> |

| | |
|--|---|
| <p>the sense in which we use that word. But, our mind is seeking permanent happiness, something that will last, that will continue. That very desire for continuity is corruption. But when the mind is free from the 'me', there is a happiness, from moment to moment, which comes without your seeking, in which there is no gathering, no storing up, no putting by of happiness. It is not something which you can hold on to.</p> | <p>में हम इस शब्द का प्रयोग करते हैं। परंतु हमारा मन स्थायी सुख-शांति के लिये ललकता रहता है ऐसी खुशी जो सदा-सर्वदा बनी रहे, अनवरत रहे। निरंतरता की यही इच्छा प्रदूषक होती है, परंतु जब मन इस 'अहं' से मुक्त हो जाता है तब ऐसी प्रसन्नता आती है जो पल-प्रतिपल रहती है--जो आपकी चाहना के बिना आ जाती है। ऐसे में, खुशी को न तो बटोरना होता है, न उसका भंडारण करना और न ही उसे कल के लिये बचा रखना। यह ऐसी चीज़ नहीं होती जिसे आप थामे रख सकें।</p> |
| <p>- 6 —</p> | <p>- ६ -</p> |
| <p>We Want Security</p> | <p>हम सुरक्षा चाहते हैं</p> |
| <p>There is the desire for security. And one can understand this desire to be secure when you meet a wild animal, a snake; or you watch when you cross the road. But there is no other form of security. Really, if you look at it, there is no other form. You would like to have security with your wife, children, neighbor, your relations—if you have relations—but you don't have it. You may have your mother, you may have your father, but you are not related, you are completely isolated—we will go into that. There is no security, psychological security, at any time, at any level, with anybody—this is the most difficult thing to realize. There is no psychological security with another because he is a human being, and so are you; he is free, and so are you. But we want security in our relationships, through marriage, through vows—you know the tricks we play upon ourselves and upon others. This is an obvious fact; it does not need great analysis.</p> | <p>हममें सुरक्षण की इच्छा रहती है। आप इस इच्छा को तब समझ सकते हैं जब आपका सामना किसी वन्य पशु या सर्प से हो जाता है या सड़क पार करते हुए जब आप एकदम चौकस हो जाते हैं। परंतु सुरक्षा का कोई अन्य स्वरूप नहीं होता। आप अपनी पत्नी के साथ, बच्चों के साथ संबंधों में--यदि आपके संबंध हैं तो--सुरक्षा पाना चाहते हैं, परंतु आपको वह मिल नहीं पाती। आपके माता या पिता आपके साथ हो सकते हैं परंतु साथ होते हुए भी आप उनके साथ नहीं होते, आप पूरी तरह अकेले होते हैं। आगे हम इस पर और चर्चा करेंगे। सुरक्षा जैसी, मनोवैज्ञानिक सुरक्षा जैसी कोई चीज़ नहीं होती, कभी नहीं होती, किसी भी स्तर पर नहीं होती, न ही किसी के साथ होती है--इस बात को सचमुच महसूस कर पाना अत्यधिक कठिन है। किसी और के साथ आपकी मनोवैज्ञानिक सुरक्षा संभव नहीं हो सकती। क्योंकि जैसे मानव आप हैं वैसा ही वह भी है, जितने स्वतंत्र आप हैं उतना ही वह भी है। फिर भी, हम अपने संबंधों में सुरक्षा चाहते हैं--विवाह द्वारा, वचनों द्वारा--हम अपने साथ व दूसरों के साथ भी कैसी-कैसी चाल चलते हैं यह आप जानते ही हैं। यह एक सुस्पष्ट तथ्य है और इसके अधिक विश्लेषण की आवश्यकता नहीं है।</p> |
| <p>-7-</p> | <p>- ७ -</p> |

| | |
|--|--|
| Realizing the Fact of Insecurity | असुरक्षा के यथार्थ को समझना |
| We never come into contact with this insecurity. We are afraid of being completely insecure. It requires a great deal of intelligence to understand- that insecurity. When one feels completely insecure, one runs away. Or, not finding security in anything, one becomes unbalanced, ready to commit suicide, to go to a mental hospital, or one becomes a most devout religious person—which are all the same, forms of imbalance. To realize—not intellectually, not verbally, not as a determined, willed attitude—the fact that there is no security requires an extraordinarily simple, clear, harmonious living. | हम इस असुरक्षा के संपर्क में कभी नहीं आते हैं। पूर्णतया असुरक्षित हो जाने के भय से हम भयभीत रहते हैं। इस असुरक्षा को समझने के लिये अत्यधिक प्रज्ञा की आवश्यकता होती है। जब कोई स्वयं को पूरी तरह असुरक्षित महसूस करता है तो वह पलायन करता है। अथवा किसी भी चीज़ में सुरक्षा न पाकर वह असंतुलित हो जाता है, आत्महत्या के प्रति प्रवृत्त हो जाता है, पागलखाने पहुंच जाता है या एकदम धार्मिक भक्त बन जाता है—ये सभी स्थितियां एक जैसी ही हैं, ये सब असंतुलन के ही विभिन्न स्वरूप हैं। बौद्धिक या शाब्दिक रूप से नहीं, और न ही किसी निश्चय की, वचनबद्धता की मनोवृत्ति के रूप में, बल्कि यथार्थतः इस तथ्य को समझ लेने के लिए कि सुरक्षा कुछ होती ही नहीं, हमें असाधारण रूप से सरल, सुस्पष्ट और सुसंगत जीवन जीने की आवश्यकता है। |
| -8- | -८- |
| Why Are We Seeking Something? | हम कुछ क्यों चाहते हैं? |
| We are endlessly seeking, and we never ask why we are seeking. The obvious answer is that we are dissatisfied, unhappy, unfortunate, lonely, unloved, fearful. We need something to cling to, we need somebody to protect us—the father, the mother, and so on—and so we are seeking. When we are seeking, we are always finding. Unfortunately, we will always find when we are seeking. | हम अनंत रूप से चाहते रहते हैं और कभी यह नहीं पूछते कि हम चाह क्यों रहे हैं। इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर यही होगा कि हम असंतुष्ट हैं, अप्रसन्न हैं, अभागे हैं, अकेले हैं, हमें प्रेम नहीं मिला है, हम भयाक्रांत हैं। हम किसी चीज़ से जुड़ जाना चाहते हैं, हम चाहते हैं कि कोई हो जो हमें संरक्षण दे—माता, पिता इत्यादि, और इसीलिए हम चाहते रहते हैं। जब हम चाहना में होते हैं तब हम कुछ-न-कुछ तलाश रहे होते हैं। दुर्भाग्य से चाहना के दौरान हम सदैव कुछ-न-कुछ तलाश ही लेते हैं। |
| So the first thing is not to seek. You understand? You all have been told that you must seek, experiment with truth, find out truth, go after it, pursue it, chase it, and that you must discipline, control yourself. And then somebody comes along and says, "Don't do all that. Don't seek at all." Naturally, your reaction is | तो पहली बात तो यह है कि हम चाहें नहीं। आप समझे? आप सभी को सिखाया जाता है कि आपको खोजना चाहिए, सत्य के साथ नये प्रयोग करने चाहिए, सत्य को ढूंढ लेना चाहिए, उसका अनुसरण करना चाहिये, उसके पीछे चलना चाहिए, उसके पीछे दौड़ते रहना चाहिए, और यह भी कि आपको अनुशासन में रहना चाहिए, स्वयं पर नियंत्रण रखना चाहिए। और |

| | |
|--|--|
| <p>either to ask him to go away or you turn your back, or you find out for yourself why he says such a thing—not accept, not deny, but question. And what are you seeking?</p> | <p>ऐसे में आकर कोई यदि यह कहे “यह सब मत करो। चाहत ही न करो” तो स्वाभाविक रूप से आपकी प्रतिक्रिया होगी कि या तो आप उसे चले जाने को कहेंगे या उसकी ओर पीठ फेर लेंगे, या आप स्वयं यह पता लगाएंगे कि वह ऐसी बात कह क्यों रहा है--न स्वीकार कीजिए, न अस्वीकार, बल्कि प्रश्न कीजिए। अच्छा तो, आप चाह क्या रहे हैं?</p> |
| <p>Inquire about yourself. You are seeking; you are saying that you are missing something in this life inwardly—not at the level of technique or having a petty job or more money. What is it that we are seeking? We are seeking because in us there is such deep dissatisfaction with our family, with society, with culture, with our own selves, and we want to satisfy, to go beyond this gnawing discontent that is destroying. And why are we discontented? I know discontent can very easily be satisfied. Give a young man who has been discontented—a communist or a revolutionary—a good job, and he forgets all about it. Give him a nice house, a nice car, a nice garden, a good position, and you will see that discontent disappears. If he can achieve an ideological success, that discontent disappears too. But you never ask why you are discontented— not the people who have jobs, and who want better jobs. We must understand the root cause of discontent before we can examine the whole structure and the meaning of pleasure and, therefore, of sorrow.</p> | <p>स्वयं के बारे में प्रश्न कीजिए। आप कुछ खोज रहे हैं; आप कहते हैं कि आप कुछ अभाव महसूस कर रहे हैं--तकनीकी तौर पर या काम-बंधे या अधिक धन के लिये नहीं बल्कि अपने जीवन में आंतरिक रूप से। वह क्या है जिसे हम चाह रहे हैं? हम चाह रहे हैं क्योंकि हममें अपने परिवार, समाज, संस्कृति और स्वयं अपने प्रति भी गहरा असंतोष है; और हम संतुष्टि चाहते हैं, कुतर-कुतर कर हमें नष्ट कर रहे इस असंतोष से परे चले जाना चाहते हैं। और हम असंतुष्ट क्यों है? मैं जानता हूँ कि असंतोष को बड़ी सरलता से संतुष्टि में बदला जा सकता है। एक ऐसे नवयुवक को जो असंतुष्ट है--चाहे वह साम्यवादी हो या क्रांतिकारी--उसे एक अच्छी नौकरी दे दीजिये और वह सब कुछ भूल जाएगा। उसे एक अच्छा घर, एक बढ़िया कार, सुंदर बगीचा, अच्छी प्रतिष्ठा दे दीजिए और फिर देखिएगा कि कैसे उसका असंतोष गायब हो जाता है। यदि उसे एक वैचारिक सफलता यानी अपने खास नज़रिये से जुड़ी कामयाबी मिल जाए तो भी उसका असंतोष गायब हो जाएगा। परंतु आप कभी यह नहीं पूछते कि आप असंतुष्ट हैं क्यों?--बात उनकी नहीं हो रही जिनके पास नौकरी है और जो बेहतर नौकरी चाहते हैं। सुख और उसके साथ-साथ ही दुख की संपूर्ण संरचना और इनके निहितार्थ की जांच-परख करने से पहले हमें असंतोष के मूल कारण को समझ लेना होगा।</p> |
| <p>CHAPTER THREE</p> | <p>अध्याय तीन</p> |
| <p>Thought, the Thinker, and the Prison of the Self</p> | <p>विचार, विचारकर्ता और अहं का कारागार</p> |
| <p>-1-</p> | <p>- 9 -</p> |